मैं बहुत कुछ करना चाहता हूँ !

कालू राम शर्मा

अक्सर शिक्षकों के बारे में जब बातचीत होती है तो उनके बारे में निराशाजनक व नकारात्मक तस्वीर पेश की जाती है। शिक्षक स्कूलों में पढ़ाते नहीं, शिक्षक मक्कार होते हैं। कुल मिलाकर शिक्षकों को हमारा शैक्षिक तंत्र शक की नजर से देखता है। मगर इस मामले में मेरे अनुभव कुछ और ही कहानी बयां करते हैं। पिछले तकरीबन दो सालों से मैं खरगोन जिले के कुछ स्कूलों में जाता रहा हूँ। स्कूलों में जाने की वजह मात्र यह रही कि मैं यहाँ के हालातों को समझ सकूँ कि कक्षाओं में किस प्रकार का शिक्षण कार्य होता है। साथ ही यह भी समझ सकूँ कि जो नकारात्मक छवि शिक्षकों की बनी है उसमें क्या सच्चाई है।

आगे कुछ कहूँ इसके पहले यह बता देना लाजमी होगा कि मैं जिन-जिन स्कूलों में गया वहाँ के शिक्षकों को मैं जानता भी नहीं था, न ही उन स्कूलों के प्रधानध्यापकों या शिक्षकों को मेरे पहुँचने की पूर्व जानकारी थी।

उल्लेखनीय है कि आजादी के बाद से अब तक जितने भी आयोग और नीतियाँ बनी उनमें शिक्षकों की शैक्षिक उत्थान की अनुशसाएँ की जाती रहीं। बावजूद इसके शिक्षकों की पेशेवर तैयारियों की अनुशंसाओं को हम ठीक से अमल में नहीं ला सके। इसके साथ ही शिक्षकों का सामाजिक रूतबा भी धीरे-धीरे कम होता गया। मगर फिर भी हमारे आसपास ऐसे शिक्षक मिल ही जाएँगे जो अपने शैक्षिक कार्य को बखूबी करते हैं। ये ऐसे शिक्षक कहे जा सकते हैं जो हमें भरोसा दिलाते हैं कि सरकारी स्कूलों में शैक्षिक परिवर्तन की लहर को वे ही ला सकते हैं। और वे इसके लिए प्रतिबद्ध दिखाई देते हैं।

यहाँ कुछ स्कूलों और वहाँ शिक्षकों के कक्षा शिक्षण को लेकर किए गए कार्य का संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत है :

खरगोन जिले के आदिवासी स्कूल में जब मैं पहुँचा तो शिक्षिका बच्चों से घिरी हुई थी। शिक्षिका के आसपास बैठे हुए बच्चे कहानियों की किताबों को पढ़ने के उपक्रम में लगे हुए थे। जी हाँ, ये बच्चे तीसरी-चौथी के बच्चे हैं। इस स्कूल मे जो बच्चे आ रहे हैं वे पास की पहाड़ी पर बसे फाल्या में निवास करते हैं। शिक्षिका में खासा उत्साह है। शिक्षिका ने हम अनजान लोगों को देख तो लिया पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। शिक्षिका बच्चों के साथ तल्लीनता के साथ जुटी हुई थी। बच्चे कहानियों को पढ़ रहे थे और जहाँ पर अटकते शिक्षिका से पूछ लेते। शिक्षिका बच्चों की मदद करती। शिक्षिका की नजरें चौकस थी कि अगर कोई बच्चा पूछने में झिझके और अगर उसे कोई समस्या आ रही हो तो वह उसको समझाती और उसकी समस्या को हल करने में मदद करती।

लगभग एक घण्टा उस कक्षा में बिताया। जब कक्षा की छुट्टी हुई तो शिक्षिका से हमने बातचीत की। शिक्षिका ने बताया कि वह बच्चों को पढ़ना सिखा रही है। वे बोलीं कि अगर बच्चों को पढ़ना सिखाना है तो उन्हें पढ़ने की प्रक्रिया से गुजरना होगा। इसलिए मैं उन्हें कहानी की किताबें पढ़ने को देती हूँ। मैं उनके इस अनूठे शिक्षण को देख अचरज करने लगा। मैंने प्रश्न किया कि शुरुआती कक्षाओं में हमारे अधिकांश स्कूलों में बच्चों को वर्णमाला और बारहखड़ी रटवाई जाती है। आप अगर बच्चों को वर्णमाला और बारहखड़ी नहीं पढ़ाएँगी तो वे पढ़ना कैसे सीख पाएँगे। शिक्षिका ने जवाब प्रश्न के रूप में दिया, "वर्णमाला और बारहखड़ी से बच्चे पढ़ना कैसे सीख पाएँगें?"

मैं शिक्षिका की यह बात सुनकर अचरज करने लगा और सोच में डूब गया। वास्तव में जब हम पढ़ते हैं तो अर्थ का निर्माण करते हैं इस दौरान। वैसे बच्चा जन्म के बाद जो कुछ बोलना प्रारम्भ करता है वह भी कुछ अर्थ लिए होता है। वर्णमाला और बारहखड़ी की जो प्रक्रिया प्राथमिक कक्षाओं में अपनाई जाती है वह तो अर्थहीन है। और भाषा के सन्दर्भ में यह भी जानते हैं कि हर बच्चे में भाषायी क्षमता कूट-कूट कर भरी होती है।

बहरहाल उस कक्षा में मैंने यह भी देखा कि शिक्षिका बीच-बीच में बच्चों से बातचीत करती और बच्चों को आपस में भी बातचीत करने के मौके देती। शिक्षिका बच्चों को अपने तयशुदा अन्दाज में बातचीत करने के मौके देती।

यह सही है कि पढ़ने और लिखने के साथ ही भाषा शिक्षण में बातचीत का काफी महत्व है। बातचीत विचारों को व्यक्त करने का सशक्त जरिया है। इस लिहाज से शुरुआती कक्षाओं में बच्चों को बातचीत करने के भरपूर मौके देने चाहिए।

मैं इसी स्कूल में दोबारा-तिबारा गया। मैं सुबह 10 बजे स्कूल पहुँच गया। स्कूल में शिक्षक-शिक्षिकाएँ तो पहुँच चुके थे मगर बच्चों की संख्या नगण्य है। एक शिक्षक ने दूसरे शिक्षक से बातचीत की ओर मोटर साईकिल उठाकर चल दिए। जब मैंने उनसे पूछा कि वे कहाँ जा रहे हैं, इस पर वे बोले कि आप भी मेरे साथ चलिए। बिना कोई

प्रश्न किए उनकी मोटर साईकिल के पीछे बैठकर चल दिया। दरअसल वे पास की उस पहाड़ी पर गए थे जहाँ के फाल्या से बच्चे स्कूल आते हैं। मोटर साइकिल टिकाकर घर-घर गए और बच्चों को स्कूल आने को प्रेरित करने लगे। कुछ पालकों से बातचीत की। उन्हें कहा कि बच्चों को स्कूल भेजो। शिक्षक को यह पता था कि कौन बच्चे लम्बे समय से स्कूल नहीं आ रहे हैं, उनके पालकों को प्यारी हिदायतें दी।

अब क्या था बच्चे अपने बस्ते लेकर स्कूल के लिए रवाना हो गए। बच्चे आगे-आगे और शिक्षक मोटर साईकिल के साथ पीछे-पीछे। शिक्षक ने बताया कि हफ्ते में एक-दो बार हम समुदाय के बीच बच्चों को लेने पहुँच जाते हैं।

बच्चों को स्कूल में लाने की यह प्रक्रिया जमी। वास्तव में जिन स्कूलों में बच्चे नियमित नहीं आ पाते उनके लिए यह प्रयास एक सबक हो सकता है। इस पूरे मामले मे यह बताना लाजमी होगा कि इस प्रकार का कोई आदेश शिक्षा विभाग की ओर से प्रसारित नहीं हुआ है कि शिक्षक बस्तियों-मोहल्लो में बच्चों को स्कूल में लाने के लिए जाएँ।

एक अन्य स्कूल में मुझे जाने का मौका मिला। एक स्कूल के केन्द्र में बच्चा होता है, मगर उस स्कूल की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने की भूमिका के केन्द्र में शिक्षक होता है। एक शिक्षक से मुझे मिलने का अवसर मिला। इस शिक्षक ने अपनी स्कूल की काया-पलट ही कर डाली। शिक्षक ने अपने स्कूल का कैम्पस इतना सुन्दर और खुशनुमा बना डाला कि यकीन नहीं होता कि यह सरकारी स्कूल होगा। कैम्पस पर नजर दौड़ाएँ तो तरह-तरह के पेड़-पौधे उनकी सिंचाई की व्यवस्था, मखमली दूब और बच्चों के खेलने की जगह। बच्चों के लिए खासकर बच्चियों के लिए शौचालय और पीने के पानी की व्यवस्था।

शिक्षक बताते हैं कि इस स्कूल कैम्पस में झाड़-झंकाड़ थे, जिनकी सफाई पहाड़ जैसा काम था। इन शिक्षक ने दिन-रात मेहनत करके कैम्पस को सुधारा और इसे हरा-भरा बना दिया। इतना ही नहीं शिक्षक ने अपनी स्कूल में एक प्रयोगशाला की स्थापना की जहाँ माध्यमिक एवं हाई स्कूल स्तर के विज्ञान विषय की तमाम थीम्स पर प्रयोग किए जा सकते हैं।

शिक्षक ने अपने स्तर पर वैकल्पिक शिक्षण सामग्री एवं पत्रिकाओं का संकलन किया जो नियमित रूप से छात्राओं को पढ़ने को दी जाती है। शिक्षक निरन्तर रूप से स्कूल को बेहतर बनाने की दिशा में प्रयासरत हैं। वे इस धारणा के विपरीत काम करते हैं कि सरकारी स्कूलों का माहौल बदल नहीं सकता। वे मानते हैं कि शिक्षक अगर चाहे तो शिक्षा का कोई भी कार्य असम्भव नहीं।

कालू राम शर्मा, अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, खरगोन में कार्यरत हैं। इससे पहले उन्होंने लगभग 20 साल तक मध्य प्रदेश में एकलव्य संस्था के साथ काम किया है। वे उदयपुर, राजस्थान में विद्याभवन सोसायटी में भी कार्यरत रहे हैं। वे शैक्षिक विषयों पर नियमित रूप से लिखते रहते हैं। उन्होंने एन.सी.ई.आर.टी. तथा नेशनल बुक ट्रस्ट के लिए भी किताबें लिखी हैं। उनसे kr.sharma@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।